International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

उपनिवेशिक कालीन भारत में अकालों का विवेचनात्मक अध्ययन

गौतम कुमार

शोधार्थी, इतिहास विभाग, पंजीकरण संख्या : 21–BMU–6335, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

डॉ० रेखा रानी

अस्सिटैंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

सारांश

उपनिवेश काल (1757–1947) में भारत वर्ष में बहुत से अकाल पड़े, इन अकालों ने उत्तर भारत को भी प्रभावित किया। भारत में पड़ने वाले प्रमुख अकालों में 1770, 1783–84, 1837–38, 1860–61, 1868–69, 1876–78, 1896–97, 1899–1900, 1907–08, 1918–20, 1943 थे।

उपनिवेशिक काल में उत्तर–पश्चिम भारत विशेषकर पंजाब, राजपूताना क्षेत्र में अकाल एक गंभीर समस्या थी, जो ब्रिटिश नीतियों और प्राकृतिक कारणों और प्रभाव से उत्पन्न हुई।

प्रस्तावना (परिचय)

भारतीय इतिहास के अध्ययन से प्रतीत होता है कि अकाल की घटनायें भारत का नियमित भाग रही हैं तथा कम या लम्बे अन्तराल में भारत अकालों की चपेट में आता रहा है। इन अकालों में लाखों लोगों की मौत हुई और बहुत बड़ी मात्रा में पशुधन की हानि हुई। ब्रिटिश भाासन में भूमि राजस्व प्रणाली जो सूखे में किसानों को असुरक्षित बनाती थी। उत्तर भारत विशेषकर पंजाब, राजपूताना, सिंध अर्ध–शुष्क क्षेत्र था। कम मानसून के साथ–साथ ब्रिटिश नीतियाँ, नकदी फसलें और राहत की कमी मुख्य कारण रहे। पंजाब और राजस्थान क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुए।

सामान्यतः अकाल का अर्थ है 'बुरे दिन' या 'असमय मृत्यु'। भूख से जनता मरती थी तो उन्हें अकाल पीड़ित कहते थे। 1867 के अकाल कमीशन ने अकाल की परिभाषा देते हुए बताया कि – अकाल का मतलब ऐसी ही स्थिति से लिया जाता है कि किसी क्षेत्र की अधिकांश या बहुत बड़ी जनसंख्या भोजन प्राप्त करने में असमर्थ होती है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

अकाल के मुख्य कारण

विद्वानों ने समय–समय पर अकालों के अनेक कारण दिये हैं, जिनमें से कुछ निम्न हैं :–

प्राकृतिक : इसमें सर्वप्रथम प्राकृतिक कारण आते हैं। भारत की कृषि मुख्य रूप से मानसूनों पर निर्भर करती है। वर्षा का न होना (सूखा पड़ना), बाढ़ें, तूफान, ओले पड़ना, फसलों में कीड़ा लगना आदि अनेक कारण हैं। वर्षा न होने पर फसलें सूख जाती हैं, चारे के अभाव में अनेक पशु मर जाते हैं।

अधिक लगान : भूमि पर अधिक लगान (टैक्स) लगाने से भी कई क्षेत्रों में अकाल की स्थिति पैदा हो जाती थी। किसान खेल खलिहानों को छोड़कर भागने के लिए मजबूर हो जाते थे।

गरीबी : देश की गरीबी भी अकाल का मुख्य कारण बनी रही। उपनिवेशिक सरकार द्वारा भयंकर आर्थिक शोषण से भारतीय किसान की गरीबी काफी हद तक बढ़ गई, उनके संघर्ष करने की भाक्ति धीरे–धीरे कम होती गई।

डॉ० तारा चन्द्र ने लिखा – भारत में अकाल का मुख्य कारण भारतीयों के अनाज खरीदने की क्षमता का अभाव था।

बेकारी – उपनिवेशिक नीति से भारतीय उद्योग धन्धे नष्ट हो जाने से तथा अंग्रेजों द्वारा भारतीय उद्योग एवं व्यापार को प्रोत्साहन न देने से इसका बोझ भी कृषि पर पड़ा।

जनसंख्या वृद्धि : जनसंख्या वृद्धि से भी अकाल की स्थिति उत्पन्न होती है। सामान्य रूप से भारत में जनसंख्या वृद्धि दर असंतुलित रही है।

परिवहन के साधनों का अभाव : रेलवे से पूर्व देश में परिवहन, यातायात के साधनों की भारी कमी रही, समय पर सहायता न मिलने पर अनेक लोग मृत्यु के ग्रास बन जाते।

युद्ध : अनेक युद्धों से किसानों की दशा अत्यधिक दयनीय और जर्जरित हो जाती थी, जो विनाश का कारण बनती थी।

सहायत रोजगार का अभाव : डॉ० वेरा अन्सटे के अनुसार कृषक के लिए सहायक रोजगार की व्यवस्था का अभाव था। अकाल के समय उसे कोई ओर सहारा नहीं मिलता था।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

विदेशी शासन : अकाल का मुख्य और प्रमुख कारण विदेशी शासन का होना रहा है जो अपने स्वार्थों के लिए देश के हितों को अनदेखा कर देता था तथा शोषणकारी था।

राहत कार्यों में देरी : भष्टाचार और सरकार की नीतिगत, प्रशासनिक अव्यवस्था से राहत कार्यों में हमेशा देरी होती थी, तब तक भारी हानि हो जाती थी।

अकाल एवं अकाल कमीशन

उपनिवेशिक काल में 1757 से 1947 तक लगभग 20 गंभीर अकालों का सामना करना पड़ा, जिसमें 10 ईस्ट इंडिया कम्पनी के काल में तथा शेष 10 सीधे ब्रिटिश शासन काल में पड़े।

- पनिवेशिक काल में 1770 का अकाल इतना भंयकर था कि इससे पूर्व 17वीं शताब्दी अथवा 18वीं शताब्दी में कभी नहीं हुआ। 1768 में बंगाल, बिहार आदि क्षेत्रों में वर्षा का अभाव था और 1769 के शुरू से ही कीमतें बहुत बढ़ गई, अन्न की कमी हो गई थी। यह अकाल पूरे साल भर रहा। भारतीय विद्वान एन०के० सिन्हा ने इस अकाल के बारे में लिखा कि कम्पनी ने अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए कोई प्रयास नहीं किये।
- 1783–84 में उत्तरी भारत में अकाल पड़ा, जिसमें दिल्ली भू–क्षेत्र के लगभग 600 गाँव उजड़ गए, जिसमें लगभग 200 गाँव 1820 तक बेकार पड़े रहे।
- 1802–03 में उत्तरी पश्चिमी प्रांतों, अवध, मद्रास, बम्बई में अकाल पड़े।
- उपनिवेशिक काल में एक और भयंकर अकाल 1837 में पड़ा। यह वर्षा के अभाव के कारण था। उत्तर भारत में फेले इस अकाल में लगभग 2 लाख लोगों की मृत्यु हुई। भयंकरता का वर्णन जॉन लारेंस ने किया जो इस क्षेत्र में तब अधिकारी थे। लारेंस के अनुसार – मैंने जीवन में कभी ऐसे दृश्य नहीं देखे जैसे कि होड़ल एवं पलवल के परगनों में दिखे। कानपुर में विशेष सैनिक टुकड़ियाँ लाशों को हटाने के लिए जाती। अंगिनत लाशें गाँवों और कस्बों में अपेक्षित रूप से पड़ी रहती।
  कैप्टेन वाल्टर कैम्पवैल ने इस अकाल के बारे में लिखा कि इस अकाल में इस क्षेत्र की लगभग आधी जनसंख्या नश्ट हो गयी।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

उपनिवेशिक शासन द्वारा कोई भी सहायतार्थ कार्य नहीं हुए, परिणामस्वरूप भुखमरी, गरीबी तथा बेरोजगारी बढ़ती गई, प्रजा विद्रोह के लिए उतारू हो गई जो सैनिक सहायता से दबा दिए गए।

सीधे ब्रिटिश भाासन के अधीन अकाल

अकालों का यह क्रम तेजी से सीधे ब्रिटिश शासनकाल में भी चलता रहा। इस क्रम में प्रथम अकाल 1860–61 का हुआ। यह पंजाब, राजपूताना, आगरा, कच्छ के अनेक भागों में फैला। अकाल का मुख्य कारण वर्षा का अभाव था। इस अकाल ने लगभग 48 हजार वर्गमील क्षेत्र को प्रभावित किया तथा लाखों व्यक्तियों को नुकसान हुआ। अकाल के लिए ब्रिटिश भाासन ने पहली बार प्रथम अकाल जांच कमीशन कर्नर वर्ड की अध्यक्षता में नियुक्त किया। तत्कालिक भूमि व्यवस्था को इसका कारण बताया गया। इस कमीशन ने केवल रिपोर्ट प्रस्तुत की परन्तु कोई सुझाव नहीं दिए।

यह इस बात के लिए महत्व रखता है कि इतिहास में पहली बार अकाल के लिए विशेष कमीशन स्थापित किया गया।

- 1866–67 के अकाल को 'उड़ीसा अकाल' के नाम से भी जाना जाता है। इस अकाल को भारतीय काल के इतिहास में एक परिवर्तनकारी पहलू माना जाता है क्योंकि सर जॉन कैम्पवैल की अध्यक्षता में एक दूसरा अकाल कमीशन नियुक्त हुआ। इस कमीशन ने अकाल के कारण, अकाल निवारण के लिए किए गए प्रयत्न तथा भविश्य में अकाल की रोकथाम के लिए सुझाव दिए।
- आगे 1868–69 में भारतवर्ष के अनेक क्षेत्रों में वर्शा की विफलता के कारण अकाल पड़ा। इससे उत्तरी पश्चिमी प्रांत, पंजाब तथा राजपूताने का बहुत बड़ा भाग प्रभावित हुआ। अनेक लोग अपना घर–बार छोड़कर अन्य स्थानों पर चले गए। अनेक पशु चारे के अभाव में मर गये। इसके साथ ही चेचक, हैजा व अनेक बीमारिरयों ने इसे और भी भयंकर बना दिया। इस अकाल में लगभग एक लाख बीस हजार व्यक्ति मारे गए। सरकार ने कुछ राहत कार्य किये।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

- 1876–88 तक भारत एक बार फिर से अकाल की चपेट में आ गया। इसमें उत्तर पश्चिमी प्रांत, अवध, पंजाब, हैदराबाद राज्य, मद्रास, मैसूर, बम्बई आदि क्षेत्र प्रभावित हुए। सरकार द्वारा कुछ सहायता कार्य हुए पर यह अव्यवस्थित तथा अपर्याप्त थे। लार्ड लिटन ने सर रिचर्ड स्ट्रेची के नेतृत्व में 1880 में तृतीय जांच कमीशन नियुक्त किया। इस कमीशन ने अनेक सुझाच दिए और माना अकाल के समय सहायतार्थ कार्यों की मुख्य जिम्मेवारी राज्य सरकारों की होनी चाहिए। इस कमीशन ने स्थानीय अकाल कोड़ बनाने का सुझाव दिया। 1883 में एक अकाल कोड़ बनाया गया जो सभी प्रांतों के लिए मार्गदर्शक बना। एक स्थायी कोश की स्थापना की गई।
- 1890–92 में पंजाब में पुनः अकाल पड़ा, इसका प्रभाव क्षेत्र सीमित रहा।
- 1896–97 में लॉर्ड एलगिन के काल में वर्शा के प्रभाव से अकाल हुआ। यह पंजाब, उत्तरी–पश्चिमी प्रांत, अवध, बिहार, मध्य प्रांत, बम्बई, मद्रास, बर्मा के ऊपरी भागों में फैला। इसमें ब्रिटिश भारत के करीब 7.5 लाख लोग मारे गए। जेम्स लायल के नेतृत्व में चौथा अकाल कमीशन नियुक्त हुआ।
- 1899–1900 में पुनः भयंकर सूखे के कारण अकाल की स्थिति पैदा हो गई। ब्रिटिश भारत तथा भारतीय रियासतों में पंजाब, मध्य प्रांत, राजपूताना, गुजरात, बरार, हैदराबाद, बम्बई प्रेसीडेंसी इसके प्रभाव में आये। इसमें भारी जन–धन की हानि हुई। महामारी के कारण भी अधिक संख्या में लोगों की मृत्यु हुई। सर जॉन इलियट के अनुसार – यह अकाल विस्तार तथा भयंकरता की दृष्टि से भारत में पिछले 200 वर्षों में भीषणतम था।
- पांचवे अकाल कमीशन की नियुक्ति 1900 में सर एंथोनी मैकडोल्ड की अध्यक्षता में हुई। इस कमीशन ने सुझाव दिया कि अकाल पीड़ितों को तुरन्त सहायता दी जाए तथा अकाल कोड संशोधित हो।

  इसी कर्म में कृषकों को साहूकारों से राहत दिलाने के लिए 1900 में पंजाब एलिनेएशन एक्ट पास हुआ, किसान बैंक खोले गए।
- 1905–06, 07, 08 में भी अकाल पड़े।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

- प्रथम महायुद्ध के बाद 1918–20 में अकाल पड़ा। यह राजपूताना, मध्य प्रान्त, बंगाल, मद्रास, बम्बई, हैदराबाद आदि क्षेत्रों में फैला। साथ ही साथ देश महामारियों से भी ग्रसित हो गए। वाडिया तथा मर्चेण्ट के मतानुसार एक करोड़ के लगभग व्यक्तियों की मृत्यु भुखमरी से हुई तथा लगभग इसमें 15 करोड़ व्यक्ति प्रभावित हुए।
- आजादी से पूर्व 1943 में बंगाल का अकाल महाविनाशकारी था। यह द्वितीय महायुद्ध के दौरान पड़ा। ब्रिटिश सरकार का ध्यान युद्ध की ओर था। भारत के वायसराय ने भी स्वयं बंगाल जाकर बंगाल के लोगों की पीड़ा को एक बार भर नहीं सुना। एक अनुमान के अनुसार बंगाल दुर्भिक्ष में जितने लोग मारे गए उनकी संख्या अंतिम भयंकर विश्वयुद्ध में समस्त ब्रिटिश साम्राज्य में मरने वाले लोगों से अधिक थी।

अकाल की जांच के लिए वुडहैड कमीशन बैठा, जिसने अपनी रिपोर्ट 1945 में प्रस्तुत की।

निष्कर्ष

अनेक कारणों के होते हुए भी भारत की गरीबी को ही अकालों का मूल कारण कहा गया। उपनिवेशिक नीतियों ने भारत के अकालों को प्राकृतिक आपदा से मानव निर्मित संकट बना दिया।

डॉ० आर०सी० मजूमदार ने इसी बीमारी के उपचार के बारे में लिखा कि इसमें शक नहीं कि व्यापार, उद्योग तथा भारतीयों का तैयार माल अकाल के विरूद्ध सबसे प्रभावी उपचार होता। स्थायी उपचार के रूप में ग्रामीण ऋण व्यवस्था बड़े उद्योगों की स्थापना, कुटीर उ़ोग का विकास, आयात–निर्यात व्यवस्था आदि भी इस दिशा में सहायक हो सकते थे।

संदर्भ सूची

- टी०एम० रौयप्पा एवं अर्किस्वामी, भारत का आधुनिक आर्थिक इतिहास (मद्रास, 1995)
- भाटिया, बी०एम०, भारत में अकाल (1860–1965), (लंदन, 1963)
- एच०एच० डोडबेल, कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया, खण्ड–टप्, भारतीय साम्राज्य 1858–1918, (दिल्ली, 1964)

- कुमार धरम, कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया, खंड–प्, (हैदराबाद, 1984)
- मजूमदार, आर०सी०, ब्रिटिश सर्वोपरिता एवं भारतीय पुनर्जागरण, खण्ड–प (बॉम्बे)
- मित्तल, डॉ० सतीश चन्द्र, भारत का सामाजिक–आर्थिक इतिहास (1758–1947), (पंचकूला, 2012)
- एन०के० सिन्हा, बंगाल का आर्थिक इतिहास, खंड–प्प
- साउथहार्ड, सामाजिक विज्ञान का विश्वकोष, खंड–टप्, 1968
- सी०वी० मेमोरिया, भारत की कृषि समस्याएँ, इलाहाबाद, 1960